पाठ - 1
रोज़े के नियम

الدرس الأول - هندي
أحكام الصيام

रोज़े का हुक्म

रमज़ान का रोज़ा रखना इस्लाम के बुनियादी अरकान में से एक रुक्न है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

بُنِيَ الإِسْلاَمُ عَلَى خَمْسٍ: شَهَادَةِ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ، وَإِقَامِ الصَّلاَةِ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ، وَالحَجِّ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ

इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर क़ायम है कलिमए शहादत"लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह की गवाही देना, नमाज़ क़ायम करना, ज़कात अदा करना, हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना।(बुखारी 8, मुस्लिम 16)

अल्लाह की क़ुर्बत हासिल करने के उद्देश्य से फ़ज्र उदय होने लेकर से सूरज डूबने तक खाने, पीने, संभोग करने और उन तमाम चीज़ों से बाज़ रहने को रोज़ा कहते हैं जिनसे रोज़ा टूट जाता है। इस बात पर सभी सहमत हैं कि रमज़ान का रोज़ा रखना फर्ज़ है क्यों कि अल्लाह तआला फ़रमाता है। فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ

यानी, "तुम में से जो कोई रमज़ान का महीना पा ले वह उसका रोज़ा रखे।

रोज़ा प्रत्येक व्यस्क, समझदार मुसलमान पर फर्ज़ है और इंसान व्यस्क उस समय होगा जब वह 15 साल का हो जाए या नाफ़ के नीचे बाल निकल आए। या एहतिलाम और मणि खारिज होने लगे। और महिलाओं के लिए एक शर्त यह भी है कि उसे माहवारी आने लगे। कोई व्यक्ति इन चीज़ों में से किसी एक से भी दो चार होगा तो मानो वह वयस्क है।

रमज़ान की फ़ज़ीलतें: अल्लाह तआला ने रमज़ान के महीने को बेपनाह फ़ज़ीलतों से नवाज़ा है जो दूसरे औक़ात में नहीं पायी जाती हैं। उनमें से कुछ फ़ज़ीलतें ये हैं:

1. फ़रिशते रोज़ेदारों के लिए बख़्शिश की दुआएं करते हैं, यहां तक कि वह इफ़्तार कर लें। 2. इस महीने में दुष्ट शैतान बेड़ियों में जकड़ दिये जाते हैं। 3. इस महीने में शबे क़द्र है, जो हज़ार रातों से बेहतर है। 4. रमज़ान की आखिरी रातों में रोज़ेदारों को बख़्श दिया जाता है। 5. अल्लाह कुछ लोगों को जहन्नम से आज़ाद करता है और यह सिलसिला रमज़ान की सभी रातों में चलता रहता है। 6. रमज़ान के महीने में उमरा का सवाब हज के बराबर हो जाता है।

इस महीने की फज़ीलतों में वह हदीस भी है जो अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

مَنْ صَامَ رَمَضَانَ، إِيمَانًا وَاحْتِسَابًا، غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ

जिसने रमज़ान के महीने में ईमान के साथ और सवाब की उम्मीद से रमज़ान का रोज़ा रखा तो उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं। (बुखारी 38, मुस्लिम 760)

और एक हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

كُلُّ عَمَلِ ابْنِ آدَمَ يُضَاعَفُ، الحَسَنَةُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا إِلَى سَبْعمِائَة ضِعْفٍ، قَالَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: إِلَّا الصَّوْمَ، فَإِنَّهُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ

इब्ने आदम के हर नेक अमल का बदला दस गुना से लेकर सात सौ गुना हासिल होगा। अल्लाह कहता है सिवाय रोज़े के, क्योंकि बन्दा मेरे लिए रोज़ा रखता है और मैं ही उसका बदला दूंगा। (बुखारी 5927, मुस्लिम 1151)